ISSN 2350 – 1065 MUKTANCHAL
वर्ष 11 :, अंक 41, जनवरी - मार्च 2024

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

विद्यार्थी मंच

मूल्य : 100 रुपये

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-11, अंक - 41, जनवरी-मार्च 2024

Chakraborty
Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा

प्रकाशक : विद्यार्थी मंच

प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय

कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय : सुरेंद्रनाथ कॉलेज, कोलकाता

डॉ. विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगबासी कॉलेज

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला एवं परमजीत पंडित

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

कार्यालय प्रभारी

बलराम साव - 8910783904, 03326751686

सम्पादक - 9831497320

प्रवन्ध सम्पादक - 9681105070

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-वंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070

ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

शोध समीक्षण

कहानी

69 मनीष कुमार सिंह : सांझी छत
74 डॉ. कविता विकास : कतरे हुए पंख
77 रजनी शर्मा बस्तरिया: एक तालाब हजार जाल.....

व्यंग

82 डा.पंकज साहा : अंतरात्मा की आवाज

भाषांतर

83 मूल लेखकः कवि जय गोस्वामी अधीन 1, अधीन 2, सपने में, वर्षा जैसी
अनुवादक : मंजु श्रीवास्तव आर्द्र बांग्ला भाषा, सीधी वात, पानी की तरह साफ

यात्रा-पर्यटन

85 पूनम सिन्हा : ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयः एक अन्तर्यात्रा
88 अंजना वर्मा : जलप्रपात जो मन तक भिंगा देता है

प्रवासी कलम

92 अरूणा सब्बरवाल : थिरकती धुन

पुस्तकायन

97 डॉ. शशि शर्मा : पानी का पता के वहाने समकालीन समय की शिनाख्त
101 डॉ. मंजुरानी सिंह : गरिमा श्रीवास्तव का उपन्यास 'आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा' पढ़ते हुए

सृजन

शोधार्थी की कलम से

103 मनोहर कुमार कामती : समीक्षा की अवधारणा और कुँवर नारायण
107 ऋतु वर्णवाल : रवि कथा : साहित्यिक गलियारे की एक अनोखी प्रेमकथा
110 दुर्गावती प्रसादः समकालीन हिंदी कवियों की कविता में स्त्री जीवन
116 अरुण कुमार तिवारी : प्रेम और राजनीतिक चेतना के कवि मदन कश्यप : पनसोखा है इन्द्रधनुष

संचार

साक्षात्कार

121 मोहन कुमार : नवगीत पर डॉ. शान्ति सुमन से मोहन कुमार का संवाद, डा. मोहन कुमार

गतिविधियाँ

126 विनोद यादव मुक्तांचल पत्रिका ने 10 वर्ष पूरे किए
127 डॉ. मनोज कुमार सिंह राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रतिवेदन

पानी का पता के बहाने समकालीन समय की शिनाख्त

–डॉ. [illegible] शर्मा

मनीषा झा समकालीन दौर की चर्चित कवयित्री है। उनकी कविताएं अपने व्यापक सरोकारों और सुस्पष्ट चिंतन दृष्टि के कारण आकर्षित करती हैं। समाज, स्त्री, राजनीति, प्रकृति, पर्यावरण, दर्शन, प्रेम आदि विषयों पर उनकी एक अलहदा सोच है, एक नवीन दृष्टि है। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त शब्द, अर्थ, भाव, चिंतन हमारी आतंरिक संवेदना को उद्वेलित करने में पूर्ण समर्थ है। उनकी कविताएँ शोरगुल नहीं मचातीं बल्कि सहज और शांत रहकर हमारी अंतरात्मा को झकझोर डालती हैं, हमें पुनर्विचार के लिए सक्रिय करती हैं। 'शब्दों की दुनिया', 'कंचनजंघा समय' और सद्यः प्रकाशित 'पानी का पता', उनके तीन प्रमुख काव्य-संग्रह हैं।

'पानी का पता' काव्य-संग्रह पंचतत्वों में एक मुख्य तत्त्व पानी की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। प्रकृति से संवेदनात्मक स्तर पर आबद्ध मनीषा झा ने यह शीर्षक संभवतः इसलिए दिया है कि पानी सिर्फ एक पेय पदार्थ नहीं है, इसका नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ भी है। 'पानी का पता' संग्रह की कविताओं से गुजरते हुए यह सोच सच हो जाती है। 'पानी का पता' के बहाने वह हमारे समय की विसंगति और विद्रूपताओं पर बार-बार चिंतन-मनन करती है। कहीं भोगवादी संस्कृति के विस्तार से विलुप्त होती 'नदी का एक घर' में पानी का पता खोजती दिखती है, तो कहीं उसके अभाव से उत्पन्न संकट से सचेत करते हुए उसकी रक्षा हेतु 'पृथ्वी की पुकार' सुनने का आग्रह करती है ताकि हम 'पानी को प्रेम दें/ धरा को रहने दें समृद्ध'। कहीं 'पानी का पता' ढूँढ़ने के बहाने 'पानी बन चलो' कहकर जीवन जीने की कला सीखाती है। गौरतलब है कि आज जब हम पानी के संकट को झेल रहे हैं, मनुष्य के अंदर से पानी के सूखने से विचलित है, पानी का पता तलाशना और बताना, दोनों ही मानवता के पक्ष में है। इसलिए पानी को देखकर वह 'आश्वस्ति' से भर जाती है – "नदी के पास होना एक आश्वस्ति है / कि तमाम ताप पीकर भी / उसका अंतरतम रहता है शीतलतम/ और ऊपर का ताप/ बस ऊपर-ही-ऊपर से बह जाता है।" यह शाश्वत सत्य है कि पानी है तो जीवन है, प्राणी है, प्रकृति है, सभ्यता है, संस्कृति है, सुख है, समृद्धि है, वैभव है।

इस संग्रह की पहली [illegible] गो' एक सशक्त कविता है। क[illegible]ति की विसंगतियों के प्रति ग[illegible] है। यह संस्कृति सबकुछ लील[illegible] आमादा है। पृथ्वी को क्षत-विक्षत करने के बाद वह चांद की स्वाभाविकता को नष्ट करना चाहता है। पर कवयित्री को लगता है – "कुछ चीजें अच्छी लगती हैं / अपने ही स्वभाव में / जैसे कि पृथ्वी/ जैसे कि सूरज / जैसे कि तारे/ जैसे नक्षत्र सारे"।

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

यह अस्वाभाविक भोगवाद जीवन-चक्र को असंतुलित कर विद्रूपताओं को जन्म दे रहा है। यह सृष्टि जितना मनुष्य का है, उतना ही मनुष्येतर प्राणियों का। परन्तु 'सिक्का' को जीवन का सर्वस्व समझने वाले, 'हड़पने की सभ्यता' के पोषक मनुष्य इस तथ्य को नहीं समझना चाहते कि - 'जीवन के चक्के को गति चाहिए / चाहिए संतुलन भी / जगह चाहिए सबको यहां / सबको जगह चाहिए थोड़ा-थोड़ा / चक्का कोई सिक्का नहीं है।"

एक साक्षात्कार में मनीषा झा बताती है –"मुझे लगता है कि मैं प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा हूँ। प्रकृति मुझे आकर्षित करती है। सभ्यता भी अपनी ओर खींचती है। मैं अपने को देवों के बीच पाती हूँ, लेकिन मेरी अंतःप्रकृति बाह्य प्रकृति से जुड़ कर सुकून पाती है।"

प्रकृति को अभिन्न महसूसने वाली मनीषा झा इसलिए जब देखती है - "सारे प्राकृत पशुओं का / हो रहा बुरा हाल / पानी का सोता सूख जाने से / सिकुड़ी पड़ी हैं तमाम नदियां / मेरे बिल्कुल पास से बह जाने वाली / तीस्ता हो, महानंदा या बालाशन की अंगड़ाइयां" वह विचलित हो उठती है। इन नकाबपोश लुटेरों की अमानवीयता और मंशा पर कवयित्री का बार-बार प्रश्न करना, प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है – "पेड़ों की हत्या कर / हर सड़क को छह गली वाले राजमार्ग में / बदलने का क्या मतलब/ क्या मतलब है कि चिड़ियों का आश्रय छीनकर / धुआं को प्रशारी देने का / क्या यह तय हो चुका है / कि पेड़ों और अन्य प्राणियों को हटाकर / हर जगह / अब सिर्फ मनुष्य ही रहेगा ?"

दरअसल मनीषा झा के लिए प्रकृति 'मां' स्वरूपा है, जिसके हरेक उपादान में मां का स्नेह, ममत्व, फटकार,चिंता का भाव समाहित है - "तो क्यूं न करूं मैं प्यार / नदी पोखर चिड़िया और पेड़ को / बार-बार क्यूं न मिलूं/उसके पास जाकर उनके गले / जब तक है यह जीवन / बनी रहे मां के दुलार की छांव / सदा रहे पांचों तत्वों की नेमत / मिलता रहे मां का स्नेहिल आशीष।"

इस संग्रह की बहुत सारी कविताएं है, जिनमें प्रकृति के साथ उनकी आत्मीयता, प्रकृति के शोषण-दोहन से उत्पन्न विकलता अभिव्यंजित हुई है। सूचना, पृथ्वी की पुकार, प्रकृति –शक्ति, आपदा के मारे, फूल पर तितली, उसने सोख लिए मेरे दुःख, तुम अद्वितीय, शिशिर का आना आदि ऐसी ही उल्लेखनीय कविताएं हैं।

गौरतलब है कि यह पुस्तक स्त्री-मुक्ति की पक्षधर रचनाकार महादेवी वर्मा को समर्पित है। कहना न होगा कि कवयित्री महादेवी वर्मा से कितनी प्रभावित है। महादेवी वर्मा स्त्री-मुक्ति संघर्ष की पुरोधा है। उन्होंने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' निबंध-संग्रह में स्त्री अस्मिता, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता, समाज में उसकी भूमिका पर बड़ी गहराई से विचार किया है। महादेवी वर्मा ने न सिर्फ लिखा बल्कि तत्कालीन पुरूष वर्चस्ववादी समाज की मानसिकता को व्यक्तिगत और सर्जनात्मक, दोनों स्तरों पर चुनौती दी। एक साक्षात्कार में महादेवी वर्मा ने बताया- "नवीन जीवन-मूल्य नारी और पुरुष दोनों के लिए सामान हैं,क्योंकि वे मानव को गरिमा देने वाले गुण हैं। सत्य, अहिंसा, स्नेह, समता, बंधुत्व आदि न केवल पुरूष के गुण हैं न नारी के। नारी माता होने के कारण मानव-आत्मा की शिल्पी भी है, अतः उसका कर्म क्षेत्र अधिक अंतरंग हो जाता है। भारतीय नारी ही नहीं विश्व भर की नारियों को अपना वर्चस्व प्राप्त करना चाहिए।"

मनीषा झा स्त्री-अस्मिता और वर्चस्व के प्रति सजग है। 'पानी का पता' संग्रह की कविताएं नवीन स्त्री-दृष्टिकोण के कारण आकर्षित करती हैं। परिवार और समाज का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होकर भी स्त्री उपेक्षणीय रहें, यह उन्हें अस्वीकार्य है। 'पूर्णिमा का चांद' कविता में चांद की सुंदरता में उस अनथक, ऊर्जस्वित, सबकी क्षुधापूर्ति में लीन पर उपेक्षित अन्नपूर्णा स्त्री का जो बिम्ब उन्होंने उकेरा है, वह नवीन और आकर्षक है - 'भूख ही अखंड सत्य है / प्राणी के जीवन का / जिसे साधने को बेचैन सब/ जानती यह स्त्री xxx उस स्त्री के न होने से कितना खाली दिखता चांद/ कितनी फीकी लगती दुनिया / तब कैसे बनाता वह पूर्णिमा का चांद स्त्री की महत्ता की इससे बेहतर परि... पना नहीं सकती।

Chakraborty
Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

मनीषा झा स्त्री ... विषयक सामाजिक ... ती हुई ... करती है। पुरूष व... से ... को समाज का महत्त्वपूण हिस्सा मानने में हिचकिचाहट आज भी ... होती है। 'दुर्घटना' शीर्षक कविता इसी मानसिकता की पहचान कराती है - 'होनी थी बहस / महिला आरक्षण के मसले पर / कई-कई कोणों से विचार होना था / मगर जब तक हम पहुंचते कि / पास हो चुका था बहुमत से / रेजोल्युशन / आरक्षण की क्या जरूरत / काम करेंगे मिल-जुल कर"

साहित्यिक जगत भी इस भेदभाव से किस तरह आक्रान्त है, इसका लेखा-जोखा मनीषा झा के पास है। तभी तो स्त्री संबंधित गंभीर मुद्दों पर स्वयं को प्रगतिशील मानने वाले कवियों की चुप्पी उन्हें खलती है। वह सवाल करती है – "हे उत्तर भारतीय पूरबिये कवि! / दहेज़-हत्या और घरेलू-हिंसा के मुद्दे / क्यों हो जाती है / तुम्हारी लेखनी काठ / अपने से बाहर निकलकर / सोचोगे कभी स्त्री के बारे में / हो पाओगे प्रगतिशील / पुरस्कार-आदि का मोह त्यागकर / मदद कर सकते हो क्या / एक सही समाज बनाने के वास्ते!"

मनीषा झा स्त्री को उसका अधिकार और स्थान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। 'तुम्हारा स्त्री बनना' कविता में वह अपनी बच्ची के माध्यम से उन तमाम बच्चियों को परंपरा के अवांछित मूल्यों की जकड़न से मुक्त करने की बात करती है। वह पारंपरिक मां की तरह 'पक्की गिरहस्थिन' बनने की सीख नहीं देना चाहती – "मेरी बच्ची मैं चाहती हूं देखना / तुममें आजाद देश की एक आधुनिक नागरिक / आत्मबोध की आभा से भरी इसलिए मैं नहीं दे सकती / वह शिक्षा तुम्हें / जो बना दे तुम्हें / 'तिरिया-चरित्तर' लिए एक गर्वीली स्त्री"

आज की सीता, रक्षाबंधन, राग, मैं शैली, सुख की तारीख, सन्दर्भ आदि इस संग्रह की कुछ उल्लेखनीय कविताएं हैं जिनमें स्त्री की मनोवेदना, प्रताड़ना, नियति और स्वीकृति की जद्दोजहद को कवयित्री ने सूक्ष्मता से रूपायित करते हुए समाज की दोहरी मानसिकता पर सवाल किया है।

इस संग्रह में कुछ कविताएं प्रेम पर आधारित है। मनीषा झा प्रेम को नए संदर्भ में देखती-परखती है। प्रेम में स्त्री और पुरुष दोनों सम्मिलित रहते हैं बावजूद इसके स्त्री पूर्ण प्रेम से वंचित रह जाती है क्योंकि 'प्रेम के पूरेपन में पेंच' है। वह देखती है – "प्रेम के पूरेपन में पेंच थे बहुत / एक सुलझाओ तो दूसरा तन जाता / प्रेम, पास, पेंच,/ परनिर्भरता, पितृसत्ता/ सब प से ही बढ़ाते थे / एक को सुलझाते बढ़ती / तो दूसरे पाँव खींच लेते थे / प्रेम के पूरेपन में पेंच थे बहुत।"

प्रेम पर पितृसत्तात्मक समाज की कितनी गहरी पैठ है, इस संग्रह की प्रेम संबंधी कविताओं को पढ़कर समझा जा सकता है। अधिकांश प्रेम कथाओं में स्त्री का प्रेम दुखद परिणति को प्राप्त होता है। 'कन्हाई ने कहां किया था प्यार' कविता इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मनीषा झा राधा-कृष्ण जैसे मिथकीय चरित्र की लोकप्रचलित प्रेम कथा पर प्रश्न चिह्न लगाती है। क्या वास्तव में राधा-कृष्ण का प्रेम इतना गहरा था कि वे पूजनीय हो गए या राधा के प्रेम की पीर ने कृष्ण को प्रेम के मंच पर लघुता के अहसास से भर दिया? कृष्ण ने सिर्फ प्रेम किया, राधा ने प्रेम की पीर सहकर प्रेम को उच्चस्तरीय और पूजनीय बना दिया। राधा ने स्त्री होकर भी प्रेम के लिए कठोर साधना की, संघर्ष किया, कृष्ण को पाने के लिए द्वारिका तक चली गयी पर प्रेमी कन्हाई उन्हें नहीं मिला। वह लिखती है – "मान मिला द्वारिका में मिला सम्मान / मगर मिला कहां / वो प्रेमी कन्हाई / प्रिय राधा चल पड़ी अकेली"

प्रेम के रूप में राधा-कृष्ण पूजनीय है, घरों और मंदिरों में उनकी पूजा की जाती है पर विचारणीय है कि यह जोड़ी पूजनीय कब हो गयी – 'फिर जो कन्हाई मिला/ राधा कृशकाय थी प्रिय के पास थी / प्रिय के प्यार में मूर्ति बन गई / खुद राधा नहीं / राधा की मूर्ति ही जग में पूजी गई।" मनीषा झा यहां प्रेम की पारंपरिक अवधारणा और मान्यताओं को तोड़ती है। वास्तव में स्त्री को प्रेम नहीं, प्रेम का छलावा ही मिला है। जिस प्रेम में वह जीती है, वह प्रेम ही उसकी पीड़ा बन जाती है।

मनीषा झा की दृष्टि न सिर्फ व्यापक है, सूक्ष्म भी है। उनकी सृजनात्मकता की विशिष्टता है कि वह जिस विषय को उठाती है, उसके पहलुओं पर कई कोणों से विचार करती है। युग परिवेश और परिवर्तन के प्रति सजगता उनकी लेखनी को सशक्त बनाती है। कोरोना महामारी की विभीषिका से हम सभी परिचित है। मनीषा झा कोरोना विषाणु की भयावहता की साक्षी रही है। उनका मानना है कि यह सिर्फ एक महामारी नहीं बल्कि उन्नत मानव सभ्... ी ऐसी त्रासदी रही, जिसने न... ते हुए इंसान को असहाय होने ... । कोरोना महामारी ने आर्थिक ... ते को बेपर्द कर दिया । इस तकनीकी और वैज्ञानिक युग में कोरोना विषाणु ने जिस भय और आतंक का वातावरण सृजित किया, वह निःसंदेह अकल्पनीय थी । उस भयावहता का दृश्य खींचते हुए वह लिखती है – "इधर उतर गया धरती पर अंधकार / दिन दोपहर हो गई अंधेरी शाम / हो गए निस्तब्ध / मानव के बनाए उपकरण / वैज्ञानिक जन / काम आये सिर्फ सूचना के / दिमाग टिमटिमा रहा / छप्पर उड़ गया बत्ती हो गई गुल/ प्रकृति और सभ्यता में मनुष्य एक पुल / लोग बदहवास जा रहे कहीं / शहर से उजड़कर / कोरोना विषाणु के मारे।"

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

कोरोना काल की विसंगति, विद्रूपता और विडंबनाओं को उजागर करती कई कविताएँ इस संग्रह में मिल जाती हैं। मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति और मानवेतर प्राणियों पर कोरोना के प्रभाव को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। जैसे- कोरोना में चक्रवात, मुरझाने से पहले, कर्फ्यू और रास्ता, वसंत में विवशता, बाहर फूल खिल रहें होंगे, ऋतु-चक्र और आशा, विषाणु और दुख, एकांत चिंतन आदि। कोरोना युग आम जन के लिए काल बनकर आया। प्रवासी मजदूरों की स्थिति इतनी बदतर हो गयी कि वे अपने घर और लोगों के पास वापस लौटने के लिए पैदल चल पड़े। कइयों ने भूख-प्यास से बेहाल रास्ते में दम तोड़ दिया –"प्राणी का जीवन/ दुर्दिन में था उस समय / घर में घुटते लोग थे / भूख से बेहाल लोक थे / सड़क पर मरता मौन था / बहुत बाद पता चला / वह कौन था।"

इस संग्रह की कई कविताओं में कोरोनाकाल की बैचनी को देखा जा सकता है। घर की चारदीवारी में कैद जीवन इंसान के भीतर घुटन, छटपटाहट पैदा कर रही थी। सभी लॉकडाउन के ख़त्म होने और सामान्य जीवन में लौटने का इंतज़ार बेसब्री से कर रहे थे। कोरोनाकाल की विसंगति को शब्दबद्ध करती हुई मनीषा झा लिखती है – "दरमियान लॉकडाउन / बंद घर में अनुभव होता / दिन के तीनों पहर की गति / आंखों में बसता था / अनगिनत चेहरों की हरियाली/ समुद्र के दीदार में विकल थीं मेरी आँखें / हवा की नमकीनिया

बुला रही हो जैसे / कितने ही पड़ावों को करना था पार / आएंगे, वो दिन भी आएंगे / हताशा को दुत्कार दो/ आशा पर मत आने दो सिलवट"

'पानी का पता' संग्रह की कतिपय कविताएं मनीषा झा की दार्शनिक प्रवृत्ति को उभारती है। वह मूलतः आशावादी है। संघर्ष को वह जीवनी शक्ति के तौर पर देखती है। कोरोनाकाल की विषम स्थिति के बावजूद वह आशावादी होकर लिखती है- "एक फूल के मुरझाने से पहले / तैयारी हो चुकी होती है / दूसरे फूल के खिल जाने की।" जीवन का यही परम सत्य है।

मनीषा झा का दार्शनिक रूप प्रकृति संबंधी कविताओं में विशेष रूप से उभरकर आया है। वह प्रकृति में न सिर्फ परम तत्त्व को देखती है, यह मानती भी है कि प्रकृति से बड़ी मार्गदर्शक और शुभचिंतक मनुष्य के लिए कोई नहीं है। प्रकृति में जो करुणा भाव है, जो निस्वार्थ भाव है, जो स्नेह, उमंग और उल्लास है, वह सभी के लिए वरेण्य है । पानी के बिम्ब द्वारा वह इस चिंतन को प्रस्तुत करती है – 'आओ पानी की तरह / सपनों के रंग लेकर /चलो पानी की तरह / हजारों रंग लेकर / रुको पानी की तरह / मेघ को संग लेकर / जीयो पानी की तरह / दिल में उमंग लेकर /बोलो, बोलो /हो सकेगा क्या ?" पानी की तरह जीवन जीना सहज नहीं होता इसलिए कवयित्री का प्रश्न स्वाभाविक है। पानी जीवन के झंझावतों को सहर्ष स्वीकार कर आगे बढ़ता जाता है । कवयित्री भी जीवन की जटिलताओं के बीच, संघर्षशील परिवेश के मध्य पगली नदी की भांति जूझने को तैयार है – "उठूंगी मैं भी उठूंगी और चलती चली जाऊंगी / कंकड़-पत्थर को ठेलकर / गुंथे अंधकार को चीरकर / पगली नदी की भांति / जब रहा-सहा बचा स्वप्न / हो जाएगा भंग"

सामाजिक जीवन के यथार्थ को व्यंजित करती कतिपय कविताएं इस संग्रह को सार्थक करती है। सामाजिक जीवन में बहुत परिवर्तन आ चुका है। एक 'नया रिवाज' चल पड़ा है। जो खुलकर बोलते हैं, वे परिदृश्य के बाहर कर दिए जाते हैं। जिस प्रकार गांव में पीपल और बरगद को बाहर कर दिया जाता है, ठीक वही स्थिति हमारे यहां बड़े-बुजुर्गों की है। वृद्धों की कारुणिक स्थिति का मार्मिक दृश्य इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है – "अपनी ... कमजोरी के बारे में / ... / वे गांव के बाहर के ... नागरिक / दिल खो... परिदृश्य से / सूने प्रांत ... जानते हैं सब / रिवाज ... रहा है अब / बोलने का ... खोलने का।"

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

'रोबोट लड़ते नहीं' शीर्षक कविता आसन्न समाज की विसंगतियों को दर्शाती है। आज AI (ARTIFICIAL INTELLIGENCE) पर जोर-शोर से काम हो रहा है। हम अब ऐसे युग में जीने को विवश होंगे जहां मशीनों का वर्चस्व होगा। मनीषा झा की दूरदृष्टि आसन्न समाज को परख ले रही है। उनके अनुसार "रोबोट सभ्यता को संवारेंगे /संस्कृति को जन्म देंगे / मनुष्य को जन्म तब एक स्त्री ही नहीं / कोई भी दे देगा / कोई भी से जन्मा मनुष्य / बड़ा बुद्धिमान होगा / बड़े कारनामे करेगा / बदलकर रख देगा मानव संस्कृति /आमूलचूल नई कर देगा पृथ्वी को / लो जितनी चाहे ले लो नवीनता" कितनी बड़ी विडंबना है कि मशीन का जन्मदाता मनुष्य स्वयं मशीन का गुलाम बन जाएगा, क्योंकि उन्हें सिर्फ लड़ना आता है और मशीन मनुष्य की इस कमजोरी का फायदा उठायेंगे –"असल मनुष्य अब सिर्फ चुनाव लड़ेंगे / फिर जोर-जोर से ललकारेंगे / फिर छोड़ देंगे बाकी को लड़ने-मरने के लिए / रोबोट तब कुछ नहीं करेंगे / क्योंकि रोबोट लड़ते नहीं।"

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह संग्रह उनकी प्रौढ़ विचार का प्रतिफलन है। इसमें सामाजिक युग और उसकी विसंगतियों को नयी दृष्टि से देखा और समझा गया है। यह संग्रह इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण और पठनीय है कि इसमें युगीन परिवेश को समय, समाज, प्रकृति और संवेदना के धरातल पर चित्रित किया गया है। अपने समय को समझने, उसके परिवर्तन के विविध कोणों को जानने-समझने में यह संग्रह सहायक है।

पुस्तक का नाम : पानी का पता
लेखक : मनीषा झा
प्रकाशक : प्रलेक प्रकाशन
मूल्य : 225 रु.

समीक्षक : शशि शर्मा

संपर्क : गौर आवासन, रविन्द्रपल्ली, माटीगाड़ा, सिलिगुड़ी – 734010, मो. 9832321080